जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट, पिथौरागढ़

मोड्यूल- 1

हस्तकला कौशलों का माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के व्यावसायिक विकास में प्रधानाचार्य का नेतृत्व- उत्तराखंड के परिप्रेक्ष्य में

विद्यालय नेतृत्व के लिए प्रशिक्षण मोड्यूल

मोड्यूल- 1

हस्तकला कौशलों का माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के व्यावसायिक विकास में प्रधानाचार्य का नेतृत्व- उत्तराखंड के परिप्रेक्ष्य में.

निर्देशन-
दिनेश चन्द्र सती
प्राचार्य
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट, पिथौरागढ़

समन्वयन
जीतेन्द्र बहादुर मिश्रा
प्रवक्ता
जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डीडीहाट, पिथौरागढ़

लेखक मंडल-
जीतेन्द्र बहादुर मिश्रा
विनोद उप्रेती, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन
नितेश खंतवाल, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन

आवरण चित्र-

1- पिथौरागढ़ के कनार गाँव में रिंगाल की टोकरी बनाते शिल्पी
2- पिथौरागढ़ की दारमा घाटी के सिपू गाँव में ऊन से थुलमा बनाती कलाकार
3- कस्तूरबा गाँधी आवासीय बालिका विद्यालय, गंगोलीहाट की छात्राओं द्वारा निर्मित पेपर मेसी शिल्प (सभी फोटो: विनोद उप्रेती)

हस्तकला कौशलों का माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के व्यावसायिक विकास में प्रधानाचार्य का नेतृत्व- उत्तराखंड के परिप्रेक्ष में.

मोड्यूल का क्षेत्र- भागीदारी का विकास, विद्यालय नेतृत्व का विकास, नवाचार

मोड्यूल के उद्देश्य-

1. उत्तराखंड में प्रचलित हस्तकलाओं एवं उनके विशेषज्ञों की पहचान करना
2. माध्यमिक स्तर पर चिन्हित हस्तकलाओं का पेशेवर कौशल के रूप में प्रशिक्षण
3. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में हस्त कला कौशलों को पाठ्यचर्या में सम्मिलित करते हुए सञ्चालन

प्रस्तावना-

भारतवर्ष में प्राचीन काल से ही हस्तकलाओं की समृद्ध परंपरा रही है. जिसका उदाहरण जम्मू-कश्मीर में पश्मीना शॉल, कालीन और गलीचे, बनारस की साड़ी, फिरोजाबाद की चूड़ियाँ, राजस्थान की बंधनी, लखनऊ की चिकनकारी, कोल्हापुर की चप्पलें, तमिलनाडु की कांचीपुरम साड़ियाँ, मुरादाबाद का पीतल का काम आदि प्रसिद्द रहे हैं . इसी तरह उत्तराखंड राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में भी विविध प्रकार की हस्तकलाएँ प्रचलित हैं. जैसे- धारचूला, मुनस्यारी, माणा, नीती एवं उत्तरकाशी में ऊन का कार्य जिसमें दन, कालीन, थुलमा, कोट, घाघरा, टोपियाँ आदि शामिल हैं, राजी जनजातियों में काष्ठकला, बांस और रिंगाल का कार्य आदि हस्त कौशल प्रचलित हैं. वर्तमान समय में उत्तराखंड में प्रचलित हस्तकौशलों सम्बन्धी ज्ञान का नयी पीढ़ी में हस्तांतरण न हो पाने के कारण ये शिल्प लुप्तप्राय होते जा रहे हैं. इन कलाओं को जीवित रखने के साथ ही एक रोजगार परक नजरिये से भी इनको शिक्षा में शामिल किया जाना आवश्यक लगता है. इसके साथ ही हस्तशिल्प के शिक्षण को एक अलग कौशल के रूप में ही नही बल्कि अन्य विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाये जाने की भी आवश्यकता है क्योंकि विद्यार्थियों में यह भी समझ विकसित हो कि यह कलाएं भारतीय संस्कृति, सौन्दर्य और अर्थव्यवस्था का अटूट हिस्सा हैं.

चिंतन के लिए प्रश्न-

प्र.1- आपके क्षेत्र में कौन कौन सी परंपरागत हस्तकलाएँ प्रचलित हैं?

....

....

प्र.2- अपने क्षेत्र में प्रचलित परंपरागत शिल्पों के ह्रास के आपको क्या कारण नजर आते हैं?

....

....

पृष्ठभूमि-

भारत में कृषि के बाद हस्तशिल्प ही रोजगार का सबसे बड़ा जरिया है. यह देश की अर्थव्यवस्था के पहलुओं- निर्यात, राजस्व एवं घरेलू बिक्री में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले कारकों में से एक है. भारतीय हस्तशिल्प और इससे जुड़े लाखों हस्तशिल्पी पारंपरिक ज्ञान एवं स्वदेशी प्रौद्योगिकी का वृहत और महत्वपूर्ण संसाधन हैं.

गांधीजी ने भी इस देश के लिए जिस तरह की शिक्षा की परिकल्पना की थी उसमें हस्तशिल्प बहुत महत्वपूर्ण स्थान में थे. बुनियादी तालीम का विचार हस्तशिल्प को केन्द्रीय तत्व और महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप देखता है जो स्वावलंबन का आधार है. **राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005** के 'हस्तशिल्पों की धरोहर', राष्ट्रीय फोकस समूह ने भी अपने आधार पत्र में इस पहलू पर जोर देकर कहा है कि *प्रत्येक दो सौ भारतीयों में से एक व्यक्ति शिल्पी है. हस्तशिल्प अद्भुत स्वदेशी प्रौद्योगिकी पर आधारित एक उत्पादन प्रक्रिया है. ऐसा नहीं कि यह कोई पुरानी हो चली या इस्तेमाल में नहीं लाने योग्य परंपरा है. स्कूली पाठ्यचर्या में*

इस बिंदु पर जोर दिए जाने की जरूरत है. साथ ही हस्तशिल्प को एक शौक के बजाय व्यावसायिक कौशल के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए. (हस्तशिल्पों की धरोहर, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र). **नई शिक्षा नीति 2020 के 20.1 में भी बच्चों को हस्तशिल्पों की शिक्षा के सम्बन्ध में यह बात कही गयी है**

आकृति 1 पिथौरागढ़ की व्यास घाटी में खिड़की में बनी काष्ठकला, (फोटो: विनोद उप्रेती)

शिक्षा की उपलब्धता जितनी आवश्यक है उतनी ही आवश्यक है उसकी गतिशीलता और सार्थकता. शिक्षा का स्वरूप ऐसा हो जिससे बच्चे अपने साथियों, समाज और प्रकृति से गहरी संवेदना से जुड़ें. इसके लिए ऐसे विषयों का चुनाव करना होगा जिनसे बच्चे की सूक्ष्मतम संवेदनाएँ जागृत हों. कला शिक्षा यह कार्य करती है. गीजू भाई, रवीन्द्रनाथ टैगोर तथा महात्मा गांधी जैसे मनीषियों का मानना है कि बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावना का विकास भी आवश्यक हैं. ये सभी आज भी प्रासंगिक है. कला सीखने का आशय केवल चित्र, गीत, संगीत या नृत्य, नाटक से नहीं है. कला शिक्षा का उद्देश्य बच्चों के चरित्र उनके सामाजिक और सौन्दर्य बोध का विकास करना है. कला की बुनियाद बचपन से ही डालनी होगी. जो गला बचपन में सध जाता है, उसमें गीत, संगीत, स्वर सदा के लिए समा जाते हैं. बचपन में ही विभिन्न कलाओं की ओर बच्चों का ध्यानाकर्षण न कराया जाए तो बड़े होने पर कला उन बिरलों को ही मिलती है, जिनमें कुछ विशेष प्रतिभा होती है. हमारा प्रदेश विभिन्न कलाओं और शिल्पों से समृद्ध है. कक्षाओं में विषयों में इसे कैसे जीवन्त किया जाए ? इसे लेकर हमारी प्रतिबद्धताएँ है और चुनौतियाँ भी बच्चों की आयु क्षमताओं, उम्र के अनुसार कला शिक्षा व हस्तशिल्प को लेकर विविध गतिविधियाँ कक्षाओं में रचनी होंगी. यह भी तय करना होगा कि कैसे कला एवं शिल्प विभिन्न विषयों जैसे - भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि की कक्षाओं को रोचक बनाकर सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में उत्पन्न तनाव को कम करें तथा सभी बच्चों की सहभागिता सुनिश्चित कर सकें. (छतीसगढ़ राज्य की पाठ्यचर्या रूपरेखा 2013)

उत्तराखंड में हस्तशिल्प की दृष्टि से पर्याप्त विविधता और विस्तार देखने को मिलता है. हनोल का महासू मंदिर हो या व्यास और दारमा घाटियों के परम्पागत भवन, काष्ट कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं. वहीँ राजी जनजाति द्वारा बनाये लकड़ी के बर्तन भी अपने आप में शिल्प के अनूठे उदाहरण हैं. उच्च हिमालयी घाटियों में रहने वाली जनजातियों ने तिब्बत और भारत के बीच व्यापार को सदियों तक संचालित किया है. इन जनजातीय समूहों के पास ऊन के विभिन्न उत्पादों के एवं वस्त्रों के निर्माण की समृद्ध परंपरा रही है. प्रस्तर शिल्प में भी पिथौरागढ़ के बौराण क्षेत्र ने किसी समय में अच्छी पहचान बनायी थी. इसी प्रकार धातुकर्म में भी उत्तराखंड में उल्लेखनीय कार्य हुए. अल्मोड़ा का ताम्र शिल्प हो या लोहाघाट में लोहे का काम, अतीत में इन क्षेत्रों में हमारी विशिष्ठ पहचान रही है. बांस और रिंगाल से बनी चीजें तो हर घर का जरुरी हिस्सा रही हैं और रिंगाल के बर्तन, टोकरियाँ, चटाइयां, डलिया आदि बनाने वाले शिल्पी सभी क्षेत्रों में रहे हैं. तराई में थारु जनजाति ने बांस और सरकंडे के शिल्प में दक्षता हासिल की हुई है.

राज्य में हस्तशिल्पियों और कलाकारों की यह अंतिम पीढ़ी नजर आती है जो अपने अपने कला कौशलों को सहेजे हुए हैं. नयी पीढ़ी में इन कला कौशलों के प्रति रुझान न होना एक चिंता का विषय है. यह एक ओर कलाओं के लुप्त होने के रूप में समाज के लिए हानिकारक है तो दूसरी ओर आजीविका के स्रोतों के कम होने के रूप में भी चिंता का विषय है.

चिंतन के लिए प्रश्न-

प्र.1- विद्यालयी पाठ्यचर्या में हस्तशिल्पों की धरोहर को शामिल किया जाना क्यों आवश्यक है?

....

....

केस स्टडी-1

हस्तकलाओं के जरिये नवाचारों को आगे बढ़ाने में युवाओं के एक समूह द्वारा किये गए कार्य की मीडिया रिपोर्ट को पढ़ने के बाद कुछ प्रश्नों पर चर्चा की जाए-

पिथौरागढ़ के बच्चों और युवाओं ने मिलकर बनाई पारम्परिक ऐपण वाली दिवाली लाइट्स

हरेला सोसायटी अपने नये-नये प्रयोगों के लिये बेहद लोकप्रिय है. हरेला सोसायटी का अपसाइक्लिलिंग का काम पिछले कुछ वर्षों से बेहद सराहा गया है. 'जुगनू लाईट' ऐसा ही एक प्रोडक्ट है जो पिछले तीन सालों से पिथौरागढ़ बाज़ार में उपलब्ध है. इस वर्ष 'जुगनू लाईट' को एक नये प्रयोग के साथ बाज़ार में लाया गया है.

इस वर्ष युवाओं की इस टीम में कुछ बच्चों को शामिल किया गया है. च्यूरे के घी से बनी 'जुगनू लाईट' को बच्चों ने पारम्परिक ऐपण द्वारा एक नया रंग देने की कोशिश की है. पारम्परिक ऐपण का रंग देने वाले मलयराज मटवाल ने बताया- दद्दा और दीदी लोगों ने हमको 'जुगनू लाईट' में ऐपण डालने को दिये और खूब तारीफ़ भी की पर जब मैं घर पर ऐपण डालता हूं तो आते-जाते लोग मुझसे कहते हैं लड़का होकर भी लड़कियों के काम कर रहा है पर मेरी आमा कहती है लोग तो कहते रहते हैं अपने रीति-रिवाज सीखने में क्या लड़का क्या लड़की. वैसे आमा ने ही मुझे ऐपण डालना सिखाया भी.

'जुगनू लाईट' बनाने वाली इस टीम में मलय और भूपेन्द्र जैसे बच्चों को युवाओं की एक टीम राह दिखा रही है. सोनू शर्मा, अशोक सिंह, रिया मलड़ा और आशीष कार्की की इस युवा टीम को खूब सराहा जाना चाहिये. 'जुगनू लाईट' के विषय में सोनू शर्मा ने बताया कि खाली बोतल को अपसाइक्लिलिड कर बनाये गई 'जुगनू लाईट' पूरी तरह स्वदेशी है. 'जुगनू लाईट' के भीतर च्यूरे का घी भरा गया है.

हरेला टीम की एक अन्य युवा सदस्य रिया मलड़ा ने बताया कि जुगनू लाईट दीवली तो रोशन करती ही है साथ ही साथ इसमें भरा च्यूरा सर्दियों में त्वचा का भी ख्याल रखता है. च्यूरा ख़त्म होने के बाद जुगनू लाईट को प्लान्टर के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है.

च्यूरा एक प्रकार का पेड़ होता है. पिथौरागढ़ जिले के आसपास च्यूरे के बहुत से पेड़ देखने को मिलते हैं. इसके बीज से यह घी बनता है. पहाड़ों में त्वचा में लगाने और कई जगह खाने में च्यूरे के घी का प्रयोग किया जाता है. हरेला की टीम के युवा सदस्य अपनी 'जुगनू लाईट' में मोम की जगह इसी च्यूरे के घी का इस्लेमाल कर रहे हैं.

पर्यावरण संरक्षण क्षेत्र से जुड़ी हरेला सोसायटी हमेशा की तरह इस बार भी जुगनू लाईट के बॉक्स के साथ एक पोटली दे रही है जिसमें जैविक खाद, मौस (काई) और फूल के बीज दिये हैं ताकि लोग जब जुगनू लाईट के भीतर का च्यूरे का घी खत्म होने के बाद उसे फेंकने की बजाय उसमें फूल उगा सकें.

फ़िलहाल हरेला सोसायटी जुगनू लाईट पिथौरागढ़ में ही उपलब्ध करा रही है. आप भी हरेला सोसायटी से संपर्क कर इस दिवाली 'जुगनू लाइट्स' अपने घर ला सकते हैं. अधिक जानकारी के लिये आप info.hare.a@gmai.com या 7453931998 नंबर पर बात कर सकते हैं. 'जुगनू लाइट्स' की कुछ तस्वीरें देखिये.

(https://www.amaruja.a.com/uttarakhand/pithoragarh/handicraft-by-ringa.-pithoragarh-news-h.d4048330159)

https://www.facebook.com/harelasociety/videos/1610111669362569

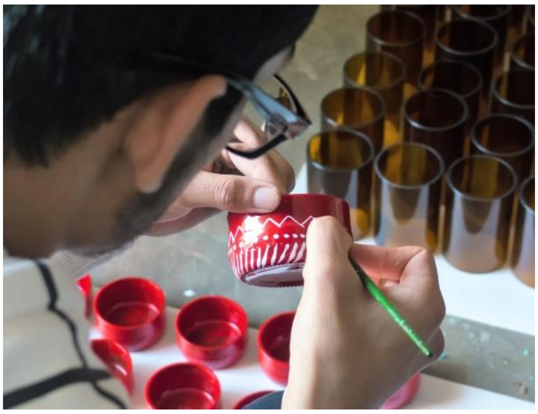

आकृति 2 हरेला सोसाइटी के स्वयंसेवकों द्वारा निर्मित कांच के दिए. (स्रोत- काफल ट्री)

चिंतन के प्रश्न-

प्र.1- उक्त रिपोर्ट में विद्यालय में की जा सकने योग्य कौन सी गतिविधियाँ हो सकती हैं.

....

....

प्र.2- उक्त रिपोर्ट में ऐपण कला के अतिरिक्त किस प्रकार के कौशलों और मूल्यों का विकास होता हुआ दिखता है?

....

....

प्र.3- ऐपण कला के प्रशिक्षण और व्यावसायिक उपयोगिता के लिए विद्यार्थियों के लिए आप एक प्रधानाध्यापक के रूप में क्या कर सकते हैं?

....

....

एन.सी.एफ. की एक मुख्य सिफारिश उच्चतर माध्यमिक स्तर पर उपलब्ध विकल्पों की संख्या बढ़ाने की है. इस सिफारिश का पालन करते हुए एन.सी.ई.आर.टी. ने एन.सी.एफ. में कुछ नए विषय क्षेत्रों को शामिल करने का निर्णय लिया, जिससे रचनात्मकता और अंतरविषयक समझ को प्रोत्साहन मिलेगा. भारत की विरासत हस्तकला एक ऐसा क्षेत्र गठित करती है, जो शिल्प के संदर्भ में सौंदर्य बोध् और उत्पादक अधिगम्यता की खोज में एक अनोखा स्थान बनाती है. (भारतीय हस्तकला की परंपरा, कक्षा 12, एनसीईआरटी)

हस्तशिल्प कौशलों की शिक्षा पर गंभीर विचार करते हुए राष्ट्रीय फोकस समूह ने इस क्षेत्र को पाठ्यचर्या के महत्वपूर्ण भाग के रूप में देखा है और इसे अन्य विषयों के साथ सम्मिलित रूप में देखे जाने की बात कही है. *हस्तशिल्प को केवल अलग विषय के रूप में ही नहीं पढ़ाया जाना चाहिए बल्कि इसे इतिहास, सामाजिक एवं पर्यावरण अध्ययन, भूगोल, कला एवं अर्थशास्त्र जैसे विषयों के साथ जोड़कर पढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि यह भारतीय संस्कृति, सौंदर्य और अर्थव्यवस्था का अटूट हिस्सा रहा है.* (राष्ट्रीय फोकस समूह, आधार पत्र)

हस्तशिल्पों की धरोहर को जीवंत करने के साथ ही उसे एक सम्मानित स्थान दिलाने में पाठ्यचर्या की भूमिका महत्वपूर्ण हो सकती है.

आकृति 3 उन से दन बनाती एक बुजुर्ग कलाकार (फोटो स्रोत :अमर उजाला)

ऊन से दन निर्माण का विडियो इस लिंक में देख सकते हैं

https://www.youtube.com/watch?v=gAuhbSdYvTc

Video Cortesy:Project FUEL in collaboration with Uttarakhand Handloom and Handicraft Development Council (UHHDC)

केस स्टडी- 2

रिंगाल को बनाया आजीविका का प्रमुख स्रोत

पहाड़ में खेती और पशुपालन के सिमटने से संकट में आए परंपरागत रिंगाल उद्योग को सजावटी सामान की संजीवनी मिल गई है. **उत्तरापथ सेवा संस्था** के प्रयासों से अब रिंगाल से बनने वाले सूप, मोस्टे और डोके की जगह आकर्षक सजावटी सामान ने ली है. रिंगाल से पहले जहां केवल पांच या छह प्रकार का सामान बनाया जाता था वहीं अब 150 से अधिक प्रकार का सामान बनाया जा रहा है. बाजार में इसकी अच्छी मांग के चलते रिंगाल हस्तशिल्प के कारोबार से जुड़े सैकड़ों परिवारों की आजीविका इसी परंपरागत हुनर से फिर से चलने लगी है.

आकृति 4 रिंगाल से बनाए गए घरेलू उपयोग के सामान (फोटो स्रोत अमर उजाला)

उत्तराखंड में बहुतायत पाए जाने वाले रिंगाल का खेती और पशुपालन से संबंधित सामग्री बनाने में उपयोग होता था. रिंगाल से मुख्य रूप से सूप, डोके/डलिया और मोस्टे बनाए जाते थे. इस हस्तशिल्प से

मुनस्यारी के सबसे अधिक परिवार जुड़े थे. मुनस्यारी में डोके, सूप और मोस्टे बनाने वाले हस्तशिल्पी जिलेभर के गांवों में जाकर रिंगाल से बनी सामग्री बेचते थे. पहाड़ में खेती और पशुपालन का कामकाज सिमटा तो रिंगाल से गुजर-बसर करने वाले हस्तशिल्पी परिवारों की आजीविका पर भी संकट आ गया. हालात यह हो गए कि पिछले डेढ़ से दो दशक के भीतर 50 फीसदी लोगों को अपने इस परंपरागत शिल्प को हमेशा के लिए छोड़ना पड़ा, लेकिन उत्तरापथ सेवा संस्था के प्रयासों से इस रिंगाल उद्योग को एक बार फिर नई संजीवनी मिल गई है. पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के *नेशनल मिशन ऑफ हिमालयन स्टडीज, जीबी पंत पर्यावरण एवं सतत विकास संस्थान कोसी कटारमल* अल्मोड़ा के सहयोग से उत्तरा सेवा संस्था ने उत्तराखंड के इस परंपरागत रिंगाल हस्तशिल्प को नई पहचान देने के प्रयास किए हैं. इस समय मुनस्यारी की 62 महिलाएं रिंगाल का सजावटी सामान बना रही हैं. संस्था की ओर से प्रशिक्षित किए गए 50 लोग स्वयं बाजार में अपने उत्पाद बेच रहे हैं.

घोंसले से लेकर झूमर तक बन रहे रिंगाल से

उत्तरापथ सेवा संस्था की कार्यशाला में इस समय छह महिला पुरुष काम कर रहे हैं. यहां पक्षियों के घोंसले, फूलदान, पूजा टोकरी, फाइल फोल्डर, लैंप, सर्विस टोकरी, झूमर, झाड़ू, कूड़ेदान, पैन स्टेंड से लेकर 150 प्रकार के सामान तैयार कर रहे हैं. मांग पर कुर्सी और सोफासेट भी बनाए जा रहे हैं.

सेना के जवानों की कलाइयों पर सजी थी रिंगाल की राखियां

वर्तमान में संस्था से जुड़ी मुनस्यारी की 62 महिलाएं रिंगाल से बेहद खूबसूरत सजावटी सामान बना रही हैं. इन महिलाओं ने रिंगाल से सात हजार राखियां भी बनाई थीं. इन राखियों को सहकारिता के माध्यम से सेना के जवानों को भेजा गया था. खूबसूरत अंगूठी, कलाई में बांधे जाने वाले आकर्षक बैंड भी यह महिलाएं बना रही हैं.

150 हस्तशिल्पी मास्टर ट्रेनर तैयार कर रही संस्था

सजावटी सामान बनाने के लिए मास्टर ट्रेनर परंपरागत हस्तशिल्पी और अन्य लोगों को प्रशिक्षण देते हैं. उत्तरापथ सेवा संस्था के परियोजना समन्वयक पंकज कार्की ने बताया कि संस्था की इस कारोबार में अधिकतम लोगों को प्रशिक्षित कर रोजगार से जोड़ने की योजना है. इसके लिए उत्तरापथ सेवा संस्था शीघ्र ही 150 मास्टर ट्रेनर तैयार करेगी. अभी संस्था के पास केवल छह हस्तशिल्पी मास्टर ट्रेनर ही हैं.

रिंगाल उत्तराखंड का प्रमुख हस्तशिल्प है. पहले रिंगाल से सूप, डोका और मोस्टा बनाए जाते थे. यह सामान अब नहीं बिकता है. इसको देखते हुए संस्था ने इस व्यवसाय से जुड़े लोगों को फैंसी सामग्री बनाने का प्रशिक्षण दिया जा रहा है. बाजार में इसकी अच्छी मांग है. रिंगाल हस्तशिल्प को उत्तराखंड में फिर से अच्छी पहचान मिलेगी.

रिंगाल के शिल्प से जुडी विडियो इस लिंक पर देखि जा सकती है.

https://www.youtube.com/watch?v=c-jCQrle8J8

Video Cortesy:Project FUEL in collaboration with Uttarakhand Handloom and Handicraft Development Council (UHHDC)

चिंतन के लिए प्रश्न-

प्र.1- परम्परागत हस्तकला कौशल को छोड़ने वाले लोगों में फिर से उम्मीद के बीज बोने में क्या क्या प्रयास किये गये होंगे?

....

....

प्र.2- विद्यालय स्तर पर इस तरह के प्रशिक्षण आयोजित करने को लेकर आपको क्या संभावनाएं दिखाई देती हैं?

....

....

प्र.3- हस्तशिल्प कलाओं को बढ़ावा देने के लिए किये जा रहे ऐसे कितने सरकारी व गैर सरकारी प्रयासों से आप परिचित हैं?

....

....

प्र.4- आम जन तक हस्तशिल्प उत्पादों की पहुँच व उनकी स्वीकार्यता को लेकर आपके क्या सुझाव हैं?

....

....

सफलता की कहानी

सुई-धागे से लिखी सफलता की इबारत और गाँव को बना दिया 'हस्तशिल्प गाँव'!

आकृति 5, फोटो स्त्रोत द बेटर इंडियन वेबसाइट

इस गाँव की महिलाएं जो भी उत्पाद बनाती हैं उन्हें 'पहाड़ी हाट' ब्रांड नाम से बाज़ार में उतारा गया है और आज यह उत्पाद न सिर्फ भारत बल्कि जर्मनी, जकार्ता जैसी जगहों पर भी अपनी पहचान बना चुके हैं!

उत्तराखंड के नैनीताल स्थित तल्ला गेठिया गाँव को राज्य का हस्तशिल्प गाँव कहा जाता है. इस गाँव की महिलाएं हाथ से ही एक से बढ़कर एक कलात्मक चीजें बनाती हैं. पारंपरिक आभूषणों से लेकर घर में बने मसाले तक यहां की महिलाएं बनाती हैं, जिस वजह से देश से लेकर विदेशों तक इस गाँव की चर्चा होती है. इस गाँव की महिलाएं हाथ के हुनर से अपना घर चला रही हैं.

यह सब संभव हो पाया है एक व्यक्ति की कोशिश और पहाड़ की महिलाओं के लिए कुछ करने की चाह से. गौरव अग्रवाल जो खुद पहाड़ों में पले-बढ़े और फिर खाटिमा से निकलकर नौकरी के लिए दिल्ली पहुँच गए. उन्होंने बीकॉम के बाद पत्रकारिता की और कई वर्षों तक मीडिया संस्थानों के साथ काम भी किया. हालांकि पहाड़ों के प्रति उनका जो लगाव था, वह हमेशा उन्हें वापस लाता रहा. हर साल अपने दोस्तों या फिर अकेले, वह पहाड़ों की यात्रा पर निकल आते.

गौरव ने द बेटर इंडिया को बताया, "मुझे पहाड़ घूमना पसंद है लेकिन इसके लिए मैं मशहूर टूरिस्ट प्लेस नहीं जाता था. बल्कि मैं पहाड़ों की तलहटी में कभी पहाड़ों के ऊपर बसे छोटे-छोटे गांवों की यात्रा करता. यहाँ पर मैंने जो जनजीवन देखा, उसने मुझे काफी प्रभावित किया. शाम होते ही अंधेरे में गुम होते गाँव, दूर-दूर तक कोई अस्पताल नहीं, बाज़ार जाने के लिए दो-तीन पहाड़ों को पार करना और सबसे बड़ी समस्या पलायन, क्योंकि कोई रोज़गार नहीं है यहाँ और खेतों में कुछ बचता नहीं."

कैसे हुई शुरूआत:

आकृति 6: फोटो स्त्रोत द बेटर इंडियन वेबसाइट

सालों से गौरव पहाड़ों में यही स्थिति देख रहे थे. हर बार वह कोई नए गाँव पहुंचते और हर बार यही सोचते कि वह उनके लिए क्या कर सकते हैं? यात्रा के दौरान उनका तल्ला गेठिया गाँव जाना हुआ. गाँव में उन्होंने एक खास बात देखी और वह थी यहां की महिलाओं के हाथ का हुनर. तल्ला गेठिया की रहने वाली रजनी देवी गाँव की औरतों और लड़कियों को सिलाई का प्रशिक्षण देती थीं, जिससे यह महिलाएं महीने के 300-400 रुपये कमा पाती थीं.

हमारे लिए यह पैसे भले ही बहुत कम हों लेकिन उन महिलाओं के लिए यह भी बहुत कुछ थे. गौरव ने रजनी देवी से बात की और जाना कि कैसे सुई-धागे के काम से भी सुंदर से सुंदर चीजें बन सकती हैं. किसी भी काम के लिए मशीन की ज़रूरत नहीं है. गौरव ने महिलाओं की इस कारीगरी को और निखारने की ठानी और उनसे कपड़े की ज्वैलरी बनाने के लिए कहा. रजनी देवी के लिए यह बहुत नया था लेकिन उन्होंने गौरव को आश्वासन दिलाया कि वह ज़रूर कुछ न कुछ कर लेंगी.

गौरव बताते हैं कि रजनी देवी ने अपनी बेटी नेहा के साथ मिलकर सबसे पहले कपड़े से गलूबंध बनाया. 'गलूबंध' उत्तराखंड का पारंपरिक आभूषण है. इसे पॉपुलर ट्रेंड में 'चोकर' भी कहा जाता है. पारंपरिक गलूबंध में सोने का काम होता है लेकिन रजनी देवी ने कपड़े के ऊपर कारीगरी करके बहुत ही खूबसूरत 'गलूबंध' बनाया. इसके बाद, उन्होंने बहुत अलग-अलग डिज़ाइन में झुमके, पायल, कमरबंद जैसे आभूषण भी कपड़े से बनाकर गौरव के सामने रखे.

गौरव ने बताया, "एक-डेढ़ साल तक हमारा यह प्रोजेक्ट ट्रायल पर चला और जब हमारे पास काफी डिज़ाइन हो गए और अन्य महिलाएं भी हमसे जुड़ने लगीं तब हमने 'कर्तव्य कर्मा संस्था' की नींव रखी. साल 2014 में शुरू हुए इस संगठन में मैंने अपनी बचत के पैसे लगाए. इस सबके दौरान मुझे मेरी पत्नी का पूरा सहयोग मिला. "

कर्तव्य कर्मा संस्था ने इन महिलाओं के द्वारा बनाए गए सभी उत्पादों को सोशल मीडिया के ज़रिए लोगों तक पहुंचाना शुरू किया. साथ ही हस्तशिल्प मेलों में, आयोजनों और प्रदर्शनियों में वह इन उत्पादों को लेकर पहुंच जाते थे. उन्होंने इन आभूषणों के लिए मॉडल अपनी कारीगरों को ही बनाया. वह बताते हैं, "मुझसे अक्सर यहां की महिलाएं पूछती थी कि 'हमारा सामान कौन खरीदेगा? हम तो गाँव के लोग हैं, हमारी क्या पहचान.' लेकिन मैंने उनसे वादा किया था कि उन्हें उनकी पहचान ज़रूर मिलेगी."

इन महिलाओं का अपने काम पर विश्वास तब बना जब विदेश से भी लोग यहां पहुंचने लगे. फेसबुक पर तल्ला गेठिया के बारे में एक पोस्ट देखकर, न्यूयॉर्क की एक वेडिंग प्लानर की टीम यहां पर आई. वह विदेशी टीम भारत में ही अलग-अलग ज्वेलरी और डिज़ाइन पर रिसर्च कर रही थी. उन्हें जब कपड़े की ज्वैलरी का पता चला तो वह खुद को रोक ही नहीं पाए. उनके आने के बाद गाँव को सोशल मीडिया पर 'हैंडीक्राफ्ट विलेज/हस्तशिल्प गाँव' कहा जाने लगा.

आज इस गाँव की 40 महिलाएं यह काम करती हैं और इनके अलावा लगभग 70 और महिलाओं ने भी ट्रेनिंग ली है जिनमें दूसरे गाँव की महिलाएं भी शामिल हैं.

गौरव बताते हैं, "इन महिलाओं में से कुछ कपड़े के आभूषणों का काम करती हैं तो कुछ को हमने बुनाई का काम दिया है. वह स्वेटर, शाल, टोपी आदि बनाती हैं. फिर हमारे पास कुछ ऐसी महिलाएं हैं जिनका हाथ आर्ट और क्राफ्ट पर नहीं बैठता, लेकिन उन्हें रोज़गार की ज़रूरत थी. ऐसे में हमने सोचा कि क्यों न पहाड़ों में उगने वाली जड़ी-बूटियों और मसालों को प्रोक्योर किया जाए. इनसे हम जैविक चाय के अलग-अलग विकल्प और जैविक मसाले तैयार करवा रहे हैं. इन्हें कूटने से लेकर साफ़-सफाई तक का सभी काम महिलाएं संभालती हैं."

उन्होंने अपने इन सभी उत्पादों को 'पहाड़ी हाट' के ब्रांड नाम से बाज़ारों में उतारा है. उनके प्रोडक्ट्स प्राइवेट क्लाइंट्स से लेकर जर्मनी और जकार्ता तक जाते हैं.

उत्तराखंड की स्थानीय कला ऐपण को लेकर भी गौरव काम कर रहे हैं. पहाड़ों पर किसी भी मांगलिक कार्य के लिए और त्योहारों पर घर के बाहर आंगन में और दीवारों पर गेरू से लीपा जाता है. फिर चावल का पेस्ट बनाकर उससे अलग-अलग कलाकृतियां बनाई जाती हैं.

गौरव कहते हैं, "अफ़सोस की बात यह है कि जैसे हमारे देश में लोग मधुबनी आर्ट, वरली आर्ट का नाम जानते हैं वैसे ऐपण का नाम बहुत ही कम लोग जानते हैं. इसलिए हमने कोशिश की कि क्यों न हम इसे किसी न किसी तरीके से दूसरे लोगों तक भी पहुंचाए. इसका सबसे अच्छा तरीका था स्टेशनरी. हमने डायरी, बैग्स और पोस्ट कार्ड आदि पर ऐपण आर्ट करना शुरू किया."

एक बार उनके यहां घुमने आए एक विदेशी ने उन्हें पोस्ट कार्ड दिया, जिस पर एफिल टावर बना हुआ था. वहां से गौरव को ख्याल आया कि क्यों न वह भी पोस्टकार्ड बनवाएं. उनके पोस्ट कार्ड इन विदेशी मेहमानों के बीच खूब मशहूर हैं. पहले सिर्फ आंगन में या फिर दीवारों पर ऐपण कला होती थी लेकिन अब तल्ला गेठिया के उत्पादों के माध्यम से यह देश-विदेश में लोगों के हाथों में पहुंच रही है.

जब वरुण धवन और अनुष्का शर्मा की फिल्म सुई-धागा रिलीज़ हुई थी तो गौरव ने ट्विटर पर तल्ला गेठिया की महिलाओं के बारे में लिखा. इस पर उनको वरुण धवन ने जवाब दिया कि उम्मीद है कि हमारी कहानी के पात्रों से आप जुड़ाव महसूस करेंगे.

वरुण धवन के इस एक जवाब ने तल्ला गेठिया को अलग पहचान दी बहुत से लोगों ने इसके बाद तल्ला गेठिया के बारे में जानने की कोशिश की. अलग-अलग जगहों से महिलाओं के लिए सराहना भरे सन्देश आए जिससे उनका मनोबल काफी बढ़ा.

गौरव की आगे कोशिश है कि वह और भी प्रोडक्ट्स जैसे साबुन-शैम्पू और मोमबत्ती आदि बनाने की ट्रेनिंग इन महिलाओं को दिलाएं. साथ ही, आजीविका के इस सस्टेनेबल मॉडल को वह दूसरे गांवों तक ले जाने की कवायद में भी जुटे हैं. बहुत से डिजाइनिंग कॉलेजों के छात्र-छात्रा उनके यहाँ इंटर्नशिप के लिए आना चाहते हैं. इसके लिए भी वह साधन जुटा रहे हैं ताकि उनके रहने और ठहरने की व्यवस्था हो सके.

वह कहते हैं कि सरकार से उन्हें भले ही कोई वित्तीय सहायता नहीं मिली हो लेकिन उनके काम की पहचान ज़रूर मिल रही है. गौरव सीमित साधनों में भी इस गाँव को वैश्विक स्तर पर पहुंचाने में कामयाब रहे हैं. उनकी कोशिश यही है कि पहाड़ों के दूसरे गाँव भी इसी तरह अपनी पहचान बनाएं. लेकिन इसके लिए उन्हें हम सबके साथ ही ज़रूरत है.

उक्त रिपोर्टिंग से सम्बंधित एक विडियो इस लिंक में देखा जा सकता है

https://www.youtube.com/watch?v=oJ6g5anf_SY

चिंतन के लिए प्रश्न-

प्र.1- अपने सेवित क्षेत्र में हस्तकला में निपुण किसी व्यक्ति/समुदाय की पहचान करने के लिए किस तरह के प्रयास किये जा सकते हैं?

....

....

प्र.2- हस्तकला कौशल में निपुण स्थानीय कलाकारों को विद्यालय व बच्चों से जोड़ने के कौन कौन से अवसर प्रधानाध्यापक निर्मित कर सकते हैं ?

....

....

प्र.3- विद्यालयी प्रक्रियाओं में हस्तकला कौशलों को अन्य विषयों से सह-सम्बन्ध बनाते हुए कैसे शामिल किया जा सकता है? कोई सुझाव.

....

....

समेकन-

कलाएं हमारी शैक्षिक चिंताओं में अक्सर हासिये में ही रही हैं और मुख्य विषय के रूप में इनका शिक्षण आम प्रचालन में नजर नहीं आता. किन्तु नीतिगत प्रश्न के रूप में कलाएं और हस्तशिल्प शिक्षाविदों की चिंता का एक महत्वपूर्ण विषय रहा है. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में भी हस्तशिल्पों की धरोहर को एक पृथक फोकस समूह ने अपने आधार पत्र में शिक्षा में इस क्षेत्र के समावेशन के लिए विस्तार में अपने विचार दिए. यह केवल विद्यार्थियों को कुछ हस्त कौशलों में निपुण बनाकर उनके सामने आजीविका के अवसर सृजित करने तक सीमित नही है अपितु सामाजिक मूल्यों की दृष्टि से हस्तकलाओं की शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है.

हमारे सामाजिक परिवेश में लोगों द्वारा किये जाने वाले कार्यों के आधार पर सामाजिक विभाजन स्थापित है और कुछ कार्य कुछ विशेष सामाजिक वर्गों में लिए ही तय माने जाते हैं. ऐसे में बहुत से श्रमसाध्य व्यवसाय और जटिल शिल्प कर्म को भी सम्मान की दृष्टि से नहीं देखा जाता. शिक्षा में हस्तशिल्पों का समावेश विद्यार्थियों में श्रम के प्रति सम्मान के मूल्य का बीजारोपण करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम हो सकता है.

प्रधानाध्यापको/ प्रधानाचार्यों के लिए विकसित यह मोड्यूल उत्तराखंड के सन्दर्भों में बनाया गया है. इस मोड्यूल में उत्तराखंड की हस्तकलाओं में से कुछ चुनिन्दा उदाहरणों को ही लिया गया है. इनके अतिरिक्त भी अनेक उदाहरण और केस स्टडी शामिल किये जा सकते हैं. उदाहरण के लिए, चर्म शिल्प, वाद्ययंत्र निर्माण, रेशे बनाने और उनसे सामग्री बनाने का शिल्प, कागज बनाने का शिल्प आदि ऐसी कलाएं हैं जो आज लगभग लुप्त हो चुकी हैं या बहुत कम देखने को मिलती हैं. ऐसे प्रशिक्षणों के उपरांत विद्यालय नेतृत्व शिक्षकों और छात्रों के माध्यम से फील्ड स्टडी, केस स्टडी और परियोजना कार्य के माध्यम से अपने सेवित क्षेत्र में प्रचलित ऐसे हस्तकौशलों की पहचान कर उसके जानने वालों को चिन्हित कर सकते हैं और उनकी सहायता से विद्यार्थियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित कर सकते हैं.

स्रोत सन्दर्भ-

1. हस्तशिल्पों की धरोहर, राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र https://ncert.nic.in/pdf/h_focus_group/Hastshi.pon%20Ki%20Dharohar.pdf
2. भारतीय हस्तकला की परम्पराएं, भूत, वर्तमान और भविष्य- कक्षा 12 के लिए हस्तकला की पुस्तक (NCERT https://ncert.nic.in/textbook.php?.hhc1=0-9)
3. छत्तीसगढ़ राज्य की पाठ्यचर्या की रूपरेखा- 2013, कला और शिल्प, राज्य फोकस समूह का आधार पत्र
4. https://www.kafa.tree.com/jugnoo-.ights-hare.a-society/
5. अमर उजाला (https://www.amaruja.a.com/uttarakhand/pithoragarh/handicraft-by-ringa.-pithoragarh-news-h.d4048330159)
6. *https://hindi.thebetterindia.com/35417/the-handicraft-vi..age-of-uttarakhand-women-making-products-india/*

अतिरिक्त स्रोत सामग्री-

1. नए साल में अमेरिका में धूम मचाने को तैयार ऐपण डिजाइन से सजी साड़ियां https://www.kafa.tree.com/saree-adorned-with-aipan-design-by-abhi.asha-pa.iwa./

2. लकड़ी और पत्थरों को तराशने की कला के माहिर है नौगॉव के रामकृष्ण https://network10tv.com/craftsman-ramakrishna-rawat-of-naugau-is-an-expert-in-the-art-of-carving-wood-and-stones/
3. दिनेश लाल – उत्तराखण्ड के लोकजीवन को तराशता कलाकार https://www.kafa.tree.com/dinesh-.a.-the-master-wood-scu.ptor-of-uttarakhand/
4. https://www.kafa.tree.com/woodart-facing-extinction-in-uttarakhand/
5. Uttarakhand Tourism Handicrafts of Uttarakhand Youtube Videos https://www.youtube.com/watch?v=ZKxEy3B4f7I&.ist=P.YzAZRgVf4pcCPeQvVbe1incQKSFXD7qE&index=4